

प्रेषक,

एस०क०मुट्ट०  
अपर मुख्य सचिव,  
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

जिलाधिकारी,  
ऊधमसिंहनगर।

राजस्व अनुभाग-2

देहरादून: दिनांक: २३ जुलाई, 2010

विषय:- ग्राम फुलसुंगा, तहसील किंचा, जिला ऊधमसिंह नगर में ग्रीन प्लाई इण्डस्ट्रीज पन्तनगर, ऊधमसिंह नगर को, औद्योगिक ईकाई के कर्मचारियों हेतु आवास/औद्योगिक प्रयोजन हेतु कुल 09 एकड़ भूमि क्य की अनुमति प्रदान किये जाने के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक, आपके पत्र संख्या-970/सात-स०भ०अ०/2009, दिनांक-9.3.2009 के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि, श्री राज्यपाल, ग्राम फुलसुंगा, तहसील किंचा, जिला ऊधमसिंह नगर में ग्रीन प्लाई इण्डस्ट्रीज पन्तनगर, ऊधमसिंह नगर को, औद्योगिक ईकाई के कर्मचारियों हेतु आवास/औद्योगिक प्रयोजन हेतु कुल 09 एकड़ भूमि क्य की अनुमति, उत्तराखण्ड (उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (संशोधन) अधिनियम, 2003 दिनांक 15-1-2004 की धारा-154(4)(3)(क)(V) के अन्तर्गत, आपके द्वारा की गयी संस्तुति एवं औद्योगिक विकास विभाग, उत्तराखण्ड शासन द्वारा दी गयी अनापत्ति/सहमति के दृष्टिगत, आपके द्वारा अनुमोदित/संस्तुत खसरा संख्याओं के अधीन निम्नलिखित शर्तों/प्रतिबन्धों के साथ प्रदान करते हैं:-

- केता धारा-129-ख के अधीन विशेष श्रेणी का भूमिधर बना रहेगा और ऐसा भूमिधर भविष्य में केवल राज्य सरकार या जिले के कलैक्टर, जैसी भी स्थिति हो, की अनुमति से ही भूमि क्य करने के लिये अर्ह होगा।
- केता बैंक या वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने के लिये अपनी भूमि बन्धक या दृष्टि बन्धित कर सकेगा तथा धारा-129 के अन्तर्गत भूमिधरी अधिकारों से प्राप्त होने वाले अन्य लाभों को भी ग्रहण कर सकेगा।
- केता द्वारा क्य की गई भूमि का उपयोग दो वर्ष की अवधि के अन्दर, जिसकी गणना भूमि के विक्रय विलेख के पंजीकरण की तिथि से की जायेगी अथवा उसके बाद ऐसी अवधि के अन्दर जिसको राज्य सरकार द्वारा ऐसे कारणों से जिन्हें लिखित रूप में अभिलिखित किया जायेगा, उसी प्रयोजन (औद्योगिक प्रयोजन एवं औद्योगिक ईकाई के कर्मचारियों हेतु आवास का निर्माण) के लिये करेगा जिसके लिये अनुज्ञा प्रदान की गई है। यदि वह ऐसा नहीं करता अथवा उस भूमि का उपयोग जिसके लिये उसे स्वीकृत किया गया था, उससे भिन्न किसी

अन्य प्रयोजन हेतु करता है अथवा जिस प्रयोजनार्थ क्य किया गया था उससे भिन्न प्रयोजन के लिये विक्रय, उपहार या अन्यथा भूमि का अन्तरण करता है तो ऐसा अन्तरण उक्त अधिनियम के प्रयोजन हेतु शून्य हो जायेगा और धारा—167 के परिणाम लागू होंगा।

4— जिस भूमि का संकरण प्रस्तावित है उसके भूस्वामी अनुसूचित जाति/जनजाति के न हों और अनुसूचित जाति/जनजाति के भूमिधर होने की स्थिति में भूमि क्य से पूर्व सम्बन्धित जिलाधिकारी से नियमानुसार अनुमति प्राप्त की जायेगी।

5— जिस भूमि का संकरण प्रस्तावित है उसके भूस्वामी असंकरणीय अधिकार वाले भूमिधर न हों।

6— शासन द्वारा दी गई भूमि क्य की अनुमति शासनादेश निर्गत होने की तिथि से 180 दिन तक वैध रहेगी।

7— क्य की जाने वाली भूमि का भू उपयोग यदि औद्योगिक से भिन्न हो तो उसे नियमानुसार औद्योगिक में परिवर्तित कराकर जी0आई0डी0सी0आर0—2005 में दिये गये नियमों एवं निर्धारित नीति/मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अन्तर्गत, प्रचलित, नियमों/मानकों एवं भवन उपविधियों के अन्तर्गत, नियमानुसार कार्यवाही करते हुए, औद्योगिक प्रयोजन हेतु, फैक्ट्री भवन निर्माण का प्लान सीडा/सक्षम प्राधिकारी से स्वीकृत कराने के पश्चात ही स्थल पर निर्माण कार्य किया जायेगा।

8— ईकाई द्वारा क्य की जाने वाली भूमि/भवन का उपयोग बुडन लॉग्स के भण्डारण व कच्चे तथा तैयार माल के भण्डारण तथा कर्मचारियों के आवास के निर्माण हेतु किया जायेगा।

9— सम्बन्धित ईकाई द्वारा सिडकुल एकीकृत औद्योगिक आस्थान, पन्तनगर में स्थापित प्लाईबुड व एम0डी0एफ0 विनिर्माणक उद्योग में, उत्तराखण्ड मूल के बेरोजगारों को न्यूनतम 70 प्रतिशत से अधिक का नियमित रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा।

10— सम्बन्धित आवेदक द्वारा भू—उपयोग करने से पूर्व सक्षम एजेन्सी (विनियमित क्षेत्र प्राधिकरण/विशेष क्षेत्र विकास, प्राधिकरण/विकास प्राधिकरण) से नियमानुसार अनापत्ति प्राप्त करनी होगी तभी वह भूमि का उपयोग निर्धारित कार्य हेतु कर सकेंगे।

11— किसी भी दशा में प्रस्तावित क्रेताओं को प्रस्तावित भूमि के अतिरिक्त अन्य भूमि के उपयोग की अनुमति नहीं होगी एंव सार्वजनिक उपयोग की भूमि या अन्य कोई भूमि पर कब्जा न हो, इसके लिये भूमि क्य के तत्काल बाद उसका सीमांकन कर लिया जाय।

12— भूमि का विक्रय अपरिहार्य परिस्थितियों के अतिरिक्त अनुमन्य नहीं होगा एंव ऐसी दशा में विक्रय किये जाने हेतु सकारण शासन का अनुमोदन प्राप्त करना होगा।

13— योजना प्रारम्भ करने से पूर्व नियमानुसार सम्बन्धित विभागों/संस्थाओं से विधिक व अन्य अनापत्तियों/स्वीकृतियों प्राप्त कर ली जायेगी।

14— उपरोक्त प्रतिबन्धों/शर्तों का पूर्णतः अनुपालन न होने पर तथा भिन्न उपयोग करने, उल्लंघन हाने की दशा में अथवा किसी अन्य कारणों से, जिसे शासन उचित समझता हो, प्रश्नगत स्वीकृति निरस्त कर दी जायेगी।

कृपया इस सम्बन्ध में तदनुसार कार्यवाही करते हुए, शासनादेश के परिप्रेक्ष्य में जिला स्तर से निर्गत किये जाने वाले ओदेश की प्रति, अनिवार्य रूप से शासन को यथाशीघ्र

उपलब्ध कराने का कष्ट करें।

भवदीय,

(एस०के०मुट्ट०)  
अपर मुख्य सचिव।

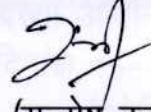
.....3

प०प०सं०-१६६२ / समदिनांकित / २०१०

प्रतिलिपि-निम्नलिखित को सूचनार्थ एंव आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

- 1- मुख्य राजस्व आयुक्त, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 2- प्रमुख सचिव, औद्योगिक विकास विभाग उत्तराखण्ड शासन।
- 3- आयुक्त, कुमाऊ मण्डल, नैनीताल।
- 4- निदेशक, उद्योग विभाग औद्योगिक क्षेत्र, पटेल नगर देहरादून।
- 5- मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सीडा, २-न्यू कैन्ट रोड, सिडकुल, देहरादून।
- 6- श्री एस०वी०साहा, पुत्र श्री एम०बी०साहा, प्लाट संख्या-२, सेक्टर ९ सिडकुल, पन्तनगर, तहसील किछा जिला ऊधमसिंहनगर।
- 7- निदेशक, एन०आई०सी०, उत्तराखण्ड, सचिवालय।
- 8- प्रभारी मीडिया केन्द्र, सचिवालय।
- 9- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

  
(सन्तोष बडोनी)  
अनुसचिव।